

ASHA ARCHIVES
2617

ASHA ARCHIVES



१ नागसमाधिसूत्र॥

ॐ नमो श्रीवज्रसत्त्वाय ॥ १ ॥ ॐ अं हूं श्रीमद्वज्रसंगगुणवज्रचक्रशब्दादि
 उ समन्वाहजकुमोर्वृक्षा अस्यखादिकुसीलिनी ॥ नमो वज्रोचनासूत्रानव
 ज्ञानागनाजा ऊ जयदेवजज्ञेत्यामवन्तोगसमधिपसफाहृत्वरुनाः सध्रव
 नायसन्नयकमसर्वसत्त्वजननी धर्माय वज्रभासका इह ॥ ॐ शुभा वज्र
 सर्वधर्माद्यादि ॥ शुभा वज्रद्वयनात्मका इह ॥ दक्षिणहस्तसंक्रान्त
 न्यादि ॥ ॐ वज्रयज्ञहस्त ॥ ॐ वं मां जिह्वं ॥ ॐ लोमां पां नां अं ॥ ॐ ना
 मरुफनक्षत्रमकी वं ॥ रुद्रस्वाहा ॥ ॐ ॥ सिल ॥ हां ॥ उद्दीष ॥ की ॥ कर्ण ॥
 हं ॥ वक्ष ॥ हं ॥ नासिका ॥ हां ॥ वक्ष ॥ हां ॥ कक्ष ॥ हं ॥ हृदय ॥ हं ॥ माहि ॥ हं
 ॥ गुच्छ ॥ हं ॥ पाद ॥ हं ॥ सिखा ॥ अं ॥ न्या ॥ ॐ अं ॥ हं ॥ त्रिकाया विष्टान ॥

ॐ वं स्वाहा वज्र ॥ ॐ नूं स्वाहा ॥ यष्ट ॥ हूं स्वाहा ॥ पूष्य ॥ नां स्वाहा ॥ गंध ॥ गं
स्वाहा ॥ धूप ॥ ज्ञां स्वाहा ॥ दीप ॥ ॐ जां स्वाहा ॥ पाद ॥ ॐ वज्र रुम स्वाहा ॥
मह्य लया ना ॥ दिग्बन्ध ॥ ॐ सुमनी हूं रुद्र ॥ ॐ गृह ॥ १ हूं रुद्र ॥ आदि ॥ ॐ मटि
किस्व स्वष्ट देवता काम नृपशस्य हं दिविकसि न कमला पात्रि सूर्यो कृष्ण कालनि
धन ॥ दश दिग्बन्ध कालनाक ॥ ॐ मदनी वज्र रुद्र ॥ ॐ सर्वपापविघ्न ॐ स्वात
न माजी पद्म वाच रुद्र वमन रुद्रा कूसरा दीन यज्ञाय नान्यसंग ॥ रुद्र हं सर्वपाप
वसानि रावयित्वा मंत्री कनूष्म मूदिनाय द्वाः सर्वसत्त्व समसो हत्वा स्व हं दिष्ट
नर्वकाज ॥ वीज यज्ञिष्म मृगा ॥ घाल सृजन न न दश दिग्ग न जलोक वां रुक्मिण ॥
सर्वदेवन न नष्टा न त्यल मि ॥ आकर्ष ॥ वज्री कृष्ण रुद्र आदि ॥ ॐ वज्र वनूष

प्रवजसत्काजाय अर्घ्यं आयमर्त्तं प्रमिच्छन्त्याहा ॥ ऊं हूं वैं हूं ॥ ॥ पुष्पान्यासः ॥ ॐ
आश्वेनी च नीलवव नूधाय स्वाहा ॥ ॐ आश्वजव नूधाय ॥ दधू ॥ ॐ वीसुकी नाग
जाजाय ॥ रुद्रान ॥ ॐ रुद्रकाय ॥ खडास ॥ ॐ कर्कोटकाय ॥ धडास ॥ ॐ पयमाय
॥ ॐ वसु ॥ ॐ कुल ॥ नागजाजाय ॥ खडाकान ॥ ॐ मंमहाभाय ॥ खडाथकान ॥ ॐ
कैकुलिकाय ॥ ॐ डाथकान ॥ ॐ धीं धं खयालाय ॥ ॐ डाकाकान ॥ मन्नाश्रय ॥
यानिकामरधस ॥ पूर्व ॥ ॐ गगधर्गजाय ॥ ॐ वैं वदप्ररु नागजाजाय ॥ ॐ वैं व
मनागजाजाय ॥ ॐ सुसूर्यप्ररु नागजाजाय ॥ ॐ धं मं रुवाकु नागजाजाय ॥
ननायद्विषद्वानमरधस ॥ ॐ मं मूविनिद्व नागजाजाय ॥ ॐ मं मधियमना
जाजाय ॥ ॐ धीं वैं वदप्ररु नागजाजाय ॥ ॐ वैं वधे नागजाजाय ॥ ॐ हूं हूं

[illegible]

पूजाय लूनात्मानं निर्यामि ॥ सर्वसत्त्वयन्त्रिदार्श आत्मा ही निर्याम
यामि ॥ संसालवमि लूमाहमयष्टु पायं ऊ सर्वध दन नूवाक मता हि न
दृशयामि मिहिर्न काचं ध निवमनसा पूजना जिनाताम वूच वूच लू न
वूच कूलय रुकी नर ध ऊ मधि मंगल कालि पूरु ॥ कसु बल व ऊ माघ
रु दानयो वूचा माहा ऊ ध निधयानि धम मयामि ऊ ध न दृश वल म न र्श
ययामि ॥ पध दृ दृ खनि कलै क नू धा उ विरु धर्म विधु धि लू नू यान्त म
द स मर्ज मी ध जिनात्मा ऊ गाऊ न गु धिन महानं ॥ निर्यामि निरिनि
ऊ दाह न न वूचा य सामंगनाय दृ स्यात्मा कार्य ॥ सर्वात्मना हि म न व मुनि
ऊ ऊ नार्थि यं ॥ लू क र्ध स ग दृ श वया लिय हाया ॥ अहा वना मू क न

वत्तालुयवाधिर्जगदर्थसिद्धियामनरुचनवाधियदमाहायद॥सामा
ध्याम्यागयगुङ्गायानका॥नरुसीवाधिसंमलपूजशुजशमरुधर्यका
नक्षवायधर्मधजाहृननद्रयानिलैकानेधमितिदिकोशनकैलुखलै
हृनी॥नद्रयानिवैकानेधवनृधरधनयदालैहृनी॥नद्रयानिलैकानेध
पृथिवीचक्रुजमुयीनकाधीविधुविकवजालैहृनी॥नद्रयानिसैकानेध
सुमनचक्रुजलनमयंशुधुधुआधरशमहिकी॥नद्रयानिकुंकाजेशकय
कालचक्रुजमुचक्रुघोलचक्रुसानेधरुषिकैहलालैहलकिहिकीजाल
वक्रुलिक्रमसिधयय्यैनी॥नत्तरध्वयैकानेधपनिधमृनीपद्ममेदीवि
वायकैशलकमात्राककदिहृकायानिस्यस्यैकायानिमृनी॥वैकाने

वीजवचनधवेनायनयनिशासृगैवचनधनागनाजाखुगवर्धुमन
व्यस्यसपुरुधच्छादिर्न॥४॥सर्वादिवलधनवामकननागया
धवलधनद्रव्यालिङ्गिर्नःनारुजधसर्वाकालेविविधसंस्कारजर्णः
माक्षिस्यलिर्न॥४॥नरपर्वदलवासकिनागनाजाखुगवर्धुनवरुधच्छ
दिर्नदक्षिधवचनद्रवामद्रव्यालिङ्गिगव्याकात्रवीजविहाय॥४॥दक्षि
दलनद्रुकनागनाजात्रकवर्धुपक्षरुधच्छादिर्न॥नकात्रवीजदक्षि
धअरुयहसुवामद्रव्यालिङ्गिगवर्धुन॥४॥पश्चिमदलककोटक
नागनाजाहनिगवर्धुसफरुनाच्छादिर्नःकीकात्रवीजदक्षिधललिर्न
वामद्रव्यालिङ्गिगवर्धुन॥४॥उरुनदलयमनागनाजाध्ववर्धु

विष्णुश्चक्रादिर्नृपकाजवीर्जदक्षिणसूर्यवामद्वयालिङ्गिर्निरावयन
विदिता ॥ अग्नयश्चक्रं रुद्रनागनाजा रुद्रवर्धुदक्षारुक्ष्माकादिर्नृप
काजवीर्जदक्षिणसूर्यवर्धना ॥ वामद्वयालिङ्गिर्निरावयन ॥ १ ॥ नैऋत्यः
महायज्ञनागनाजा ॥ सिम्बनकवर्धुद्विषीदक्षारुक्ष्माकादिर्नृपदक्षिणसूर्य
वर्धनी ॥ वामद्वयालिङ्गिर्नृपकाजवीर्जदक्षिणसूर्यवर्धना ॥ २ ॥ वायव्यदक्षिण
लिकनागनाजाविष्णुवर्धुद्विषीदक्षारुक्ष्माकादिर्नृपदक्षिणसूर्यवर्धनी
वर्धनी ॥ वामद्वयालिङ्गिर्नृपकाजवीर्जदक्षिणसूर्यवर्धना ॥ ३ ॥ ईशानदक्षिणसूर्यवर्धनी
लनागनाजापीनवर्धुनवरुक्ष्माकादिर्नृपकाजवीर्जदक्षिणसूर्यवर्धनी ॥ ४ ॥ मध्यय
ज्ञसंज्ञाया निना ३३ न ॥ पूर्वयज्ञयानिकास्त्वानवाया ॥ ५ ॥ उं शुक्ल

नागनाडा रुप निगडी ननागनाडा रुप वधुय स्वाहा ॥ मरध्व ॥ उं वं
परुनागनाडा रुप वधुय ॥ ४ ॥ उं सूर्य परुनागनाडा रुप वधुय ॥
वाम ॥ उं समवा रुनागनाडा रुप वधुय ॥ वाम ॥ दक्षिण दिगय नि
काय ॥ उं मविनागनाडा रुप वधुय ॥ मरध्व ॥ उं मधि परुनागनाडा
रुप वधुय ॥ ४ ॥ उं रुनुनागनाडा रुप वधुय ॥ ४ ॥ उं वर्धनागना
डा रुप वधुय ॥ वाम ॥ उं रुनागनाडा रुप वधुय ॥ वाम ॥ ४ ॥ प
श्चिम दान पनिका ॥ ४ ॥ उं रंगनागनाडा रुप वधुय ॥ मरध्व ॥ उं सिं
नागनाडा रुप वधुय ॥ दक्षिण ॥ उं असुनागनाडा रुप वधुय ॥ द
क्षिण ॥ उं चक्रनागनाडा रुप वधुय ॥ वाम ॥ उं सिमानागनाडा रुप वधुय

धुम्यः॥ वामः॥ ॥ उरुनक्षत्रयामिका॥ ॥ ॐ अनिननागनाजाश्चाम
वधुम्यः॥ मरुधः॥ ॐ अननक्षत्रनागनाजाश्चामवधुम्यः॥ दक्षिणः॥ ॐ अन
वक्षत्रनागनाजाश्चामवधुम्यः॥ दक्षिणः॥ ॐ समक्षिद्रनागनाजाश्चामवधुम्य
॥ वामः॥ ॐ अक्षत्रनागनाजाश्चामवधुम्यः॥ वामः॥ ॥ विदिगयामिकाकु
नसः॥ ॐ अननक्षत्रनागनाजाश्चामवधुम्यः॥ अरुणः॥ ॐ नैदननागनाजाश्चामवधुम्य
यः॥ नैमसः॥ ॐ समक्षिद्रनागनाजाश्चामवधुम्यः॥ वायुः॥ ॐ वर्धननागना
जाश्चामवधुम्यः॥ वायुः॥ ॐ वर्धननागनाजाश्चामवधुम्यः॥ दक्षिणः॥ ॥
पूजाद्यैर्मुकुलधियानिनागनाजाश्चामवधुम्यः॥ सत्त्वार्थयामिका
निर्णवज्ज्वादीनमस्तु॥ ॐ नक्षत्रविधिनागनाजाश्चामवधुम्यः॥

लीविहृष्टादिर्न पञ्चगव्यगन्दिगवर्धुस्त्वमन्त्रधायनीयाहव
नि॥ १॥ उँवज्जधार्गवनीहँ उँसत्त्ववकीहँ उँनत्त्ववकीहँ उँधर्मवकीहँ
उँकर्मवकीहँ॥ समयसत्त्वज्ञानसत्त्वमवलोकिनीपरध्वजा॥ २॥ आठ्या४
उँहँ वँहा४॥ अरिषकमहावर्ज्यादि४॥ मकूटवज्रध्वजः नामाचार्य॥
वँ अँ जिँ खँ हँ॥ उँदेकाह्रिषकपूष्यन्यास॥ अथ मसीप्रवक्षामिका
यमधुलमरुमं॥ अंगन्यास॥ उँविष्यकायविष्यजननालीवन्नृशता
गमाजाविद्र॥ हँ शिज॥ हँ उँह्रिया॥ उँह्रिकाशदवास्तववास्तुकि
॥ हिँ कर्तु॥ वृद्धाग्रयः पूष्यजनीरुआगाजलनालिका॥ सूर्यनन्दक
याला॥ हँ वद्वया॥ श्रीगमितानित्मनः॥ शीखयाले॥ हँ नासा॥ शभा

न नार्द्धा कर्काटकं मूख ॥ द्विपनादिलनयदश नामजम ॥ नरुका ॥
उं कर्काटकायापूय्यन सर्वजस्य ललादन कूलिक ॥ हूं हृदय ॥ यमना
गम लंकाजलाकेले ॥ हों नारी ॥ माहायज्ञ रजलाऊखना ॥ हों गुफे
कूपदकवाध्वा कूलिक ॥ हों याद ॥ कूं हाग वाजनांग ॥ कूं शिखा ॥ सु
राय सुवन रक्ष घनागम मग नानिलेजस्य सामान्य नागसे व्यक्त ॥ उं व
नूधाय कूं वं कूं स्वाहा ॥ १ ॥ नमावलिंद आन ॥ उं आवमनी प्रमिरे स्वाहा
उं वऊ नूधाय खखखाहि शनिष्ठ २ वं न्व २ मूमकस्य सानि प्रीकृ नूशी
घं आगरे २ वर्षीय य २ कूं २ कूं २ स्वाहा ॥ उं आ ४ कूं हो ४ उय विऊय
यमे कर्काटकवा सुकिरीखपाल कूलिकान न न न दकमहायज्ञ ४

सयनिवात्रत्यः ॐ देवलिगन्धपूष्यधूपदीपमङ्कगददाम्यहं तवागम
सयनिवात्रा ॥ श्रीधुं ॐ मर्वलिगृक्तस्वादनूपीवीरुजः ॥ वंहा ॥
सकृफान्सर्वसत्त्वानां शक्तिं पूर्णं कुरु ॥ ॐ देवधनम्राज्ञाययः
निरुत्वाहा ॥ यलाद्यमुनि ॥ ॐ निनागसमाधिसमाफ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
उन्नमः श्रीवक्तृसत्ताय ॥ यनानिकृपस्त्रायन ॥ नाही कामसमीनेरुनिवाग्व
मरु ॥ इहिकुच्छा वीजहन्धाकुयाधान ॥ पूर्व ॥ विहिस्वानडा वीजनीलधा
तु ॥ द ॥ विमास वीजपूष्यवागधा सिज ॥ ये ॥ विच्छा वीजमलिक ॥ धाकुफ
यह ॥ उ ॥ विपूवावीजमेत्र ॥ धाकुडाहाय ॥ श्रीहस्तवीजककुटी ॥ धाकु
मल ॥ ने ॥ वित्रेका वीविद्वलधाकुली ॥ वा ॥ वीहायूहास्तवीजानाडाकः

धाम्नि ॥ ७७ ॥ श्रीपलका वीज महिकवाहु आहा ॥ सुगुमिपश्चमृम ॥ हिमि
कुथिऊनसहनिवागवल्कायास्यनयक ॥ धननिवनिविधानक्रियाया
यधूनछाउकमीरुसुपूजादनकस्वस्तिवाक्कनधूनछाउप्रदिष्टायामखसि
प्रखहीलायगवउह मूष्टेनागवाचकस्कायनयचन्द्रविस्मृकयाउमरुध्वप
प्रखाननहयकजलकृष्णस्कायनयश्चसुकाकुमानिसुकातहिने ॥
पश्चविहिपेस्वशषदियश्चपलवयश्चमृमथने ॥ धूमिधायनायाछाउ ॥
शवायगुनमधुलसिधनसमाधिक्षीमाधिवारनधीलक्षीयकृषीयकृ
०० नायकउपूजाधूनछाउजलकृष्णधिसान ॥ ७७ ॥ सुखं दुःखं लंका ॥
श्रीखलखनहाय ॥ उमयनिवजिशीखवउवध्वक ॥ वजनश्रुधिसान ॥

ॐ वज्रसूत्रम् ॥ कथं कथयन् ॥ ननु ॐ मयि कथं ॥ आदि ॥ लोकपालः पापः
लाघीर्ष्यम् ॥ ॐ इत्युक्तं किंचित् वज्रसूत्रं सर्वत्र यथाधियेदव ॐ इत्युक्तं
नमाम्यहं ॥ १ ॥ तालकायमहान् नर्तकं महिम्ना सन्निभं नमदहं कनधार्य
श्रीकृष्णकनकनमाम्यहं ॥ २ ॥ शुद्धसूत्रिकसंकासं शुद्धतागधियप्रभुजीः
लमक्षिकधर्म्यवर्धनयनमाम्यहं ॥ ३ ॥ सूत्रकायमहान् नर्तकं तालकाल
समपहं शुद्धवर्धनप्रदाकाय कृवजायनमाम्यहं ॥ ४ ॥ द्वादशदिग्
नर्तकं सूत्राया नधर्तवी नैवामकमहं लनधार्यं शुजासन्निभमाम्यहं ॥
॥ ५ ॥ लाकावर्धुमहाकायहागारुजशरुषिर्नखक्रयाग्रधर्तवी नैव
नासन्निभमाम्यहं ॥ ३ ॥ यनहसकसूत्रार्तसूत्रादहमहावलवयलपल

दर्वीमृगमसनीनमाम्यहं ॥ १ ॥ स्रजयाशिखिनर्तयिषुक्कवर्धुमहाकुलस
दाकल्याननिगधश्रियुक्तकनमाम्यहं ॥ ८ ॥ उर्ध्ववृक्षापीनवर्धुवैकु
वर्धुपालगश्रुकमधुप्रकृष्टसूयहंसानुठनमाम्यहं ॥ २ ॥ नागनाकुम्भ
धवलीकृमाङ्गलिकलधृगं ॥ यमयनिर्सीलिकनश्रुसयनागनमाम्यहं ॥
५० ॥ विधिवीकृशधर्वयवमृगकृसीयुक्तीसंघीकृकनकवर्धुयशास
नीनमाम्यहं ॥ ११ ॥ नगाकुलधायन ॥ केषसासगीखलय ॥ उर्ध्वनना
वासुकिङ्ककककीटकयममहायमश्रीखयालकलिकवन्धयालद
वर्गिमहादवमिसामसिखिमहासिखिदधुधनमहादधुधनअयला
लङ्गलङ्गनदीपनदसांगनमहासांगनअनवमकशीकानिसूत्र

भूर्भुवः स्वः नमः

अथैतद्विद्

रामरावता॥

यमहासुनूयरुद्राहिकमहादलसिनिमहासिनिहमहानागभधियः
मियनालीकयमागुरुत्वयनार्थस्यसिखाहा॥ नगाआपरधन॥ १॥
हामहावना॥ नगाआयमस्तुसमर्ध्वकोजधयममालन्वाकद्रयनियं
कालाद्गर्भवन्धनूयैत्रकनूर्वीद्विभुजभुक्कवर्धुसफरुधालैकनीः
वामनागयाधधनाः पूर्वदलअनकनागजाजानीलेवधुविभुना॥
दक्षिणदलयमनागवाजाभुक्कवर्धुयैधुना॥ यश्चिमदलेनैक
नागवाजाजकवर्धुनवधुना॥ उरुजदलेवासुकिनागवाजास्यावा
धुसिफरुध॥ अग्निदलेसरवयालनागवाजाजकवर्धुसफरुध॥
नेसम्यदलेककोटकनागवाजाधवलवधुसफरुना॥ वायूधदल

कलिकनाराजाकाकूर्कसवर्धसफरुता ॥ ॐ श्रीमानदलमहायज्ञनाग
नाजायीकवर्धसफरुता ॥ स्वस्वमूडाविहाव्यस्वाहम्मुसमायन्नासमय
संक्रुसमपक्कान्तप्रहृहिहाहावनृशदवअक्रकलमहानागधियनं
हजम्बेदीयपनात्रिभयआगच्छहृक्वस्व ॥ आ. पा. पू. नि. त्रा. अ. न
॥ ॐ ॥ गार्कनाजकूर्क ॥ गार्कनाजमूडा ॥ ॐ वववृभययहृस्वाहा ॥ ॐ अन्नना
यहृ ॥ ॐ वासुकिहृवहृ ॥ ॐ नरुकायहृनहृ ॥ ॐ यशायहृनहृ ॥ ॐ म
हायशायहृनहृ ॥ ॐ श्रीरवपालायहृनहृ ॥ ॐ कर्काटकायहृनहृ
॥ ॐ कलिकायहृनहृ ॥ ॐ यम् ॥ वज्रधदयातागनाजस्यस्वस्वदवय
स्तिनसेताभयसदानिर्णवज्रधयनेमम् ॥ ॐ सर्वनथागनकायविद

साधनस्वाहा ॥ श्रीखड्गलनस्तान ॥ ॐ वज्रदप्यधरूं ॥ कसकनकन ॥ इइ
स्वधन ॥ ॐ स्वधुलाहं ॥ ननाकुलसिमाविय ॥ ॐ वज्रवधुधियन
सर्वविघ्नाहल ॥ कुलसिमाविहिसाधन ॥ ॐ स्वधुलाहं स्वाहा ॥
ॐ नगावज्रधुक्कं धरूं नधप्रवीरुलप्रमार्थगुक्कवर्जविनाय ॥ ॐ
वज्रवज्रधामस्वाहा ॥ वज्रसि ॥ ॐ वाधिव्रकायस्वाहा ॥ ॐ जगगति ॥ ॐ वज्रय
हायस्वाहा ॥ इन्धजसि ॥ ॐ वज्रननायस्वाहा ॥ पिनायसि ॥ ॐ वज्रकूवजा
स्वाहा ॥ वज्रसि ॥ ॐ वज्रसंहकानायस्वाहा ॥ अन्धसि ॥ ॐ अन्धनिहनवजाय
स्वाहा ॥ कूठ ॥ ॐ वजायकूस्वाहा ॥ मरु ॥ ॐ सर्वपायदहनवजायसर्वपाय
दहस्वाहा ॥ स्वर्गलील ॥ ॐ वज्रयूथस्वाहा ॥ अरुन ॥ ॐ वज्रवर्गयस्वाहा ॥ नरु ॥

ॐ वज्रवीजाय स्वाहा ॥ स्नान उभ ॥ ॐ सर्वार्थसिद्धि स्वाहा ॥ नमो ॥ ॐ वज्रदर्शन
कुलाय स्वाहा ॥ कालस ॥ ॐ वज्रनाजाय स्वाहा ॥ नाय ॥ ॐ श्री १४ हं स्वाहा ॥ मन्त्र
मूलमकुनयिसफवा ॥ वीहिदय ॥ कुलाकूमियाय ॥ थनहा कुनिधनहा वमकु
न्यास ॥ जाय ॥ ॐ वज्रवन्धाय ॐ हजुम्वदीय वधीयय हूं वं हूं स्वाहा ॥ १०८ ॥
गंगामधुलध्यापिक ॥ थनदवयुजा ॥ धप निनाऊन यं ला धीमुनि ॥ कुलरिधियनि
नागनाजाय स्वस्वदवास्तिरु सत्वाथेयिसदानिर्ग्य वन्धाय नमस्तु ॥ नगाय
ववकु ॥ विहिदय ॥ थनमधुल कुनिविय ॥ अकुरु गंधा लोयहास यधम मगध
नवाजा वमूल आ कुनिविय ॥ ॐ वन्धाय हूं वं हूं स्वाहा ॥ गंगारत्नधनी वन्
धाय मधुल कुनिस्वाहा ॥ ॥ ॥ यं ला धीमु ॥ थनहिनिमहाजसा रिद्ववा

कथयामदानवियः॥ प्रमिष्टाकृतसादानवियसुमालः॥ धनगभजसंश्रामस
 कलाउठाउठाधूययाय॥ धीखलैखनहाय॥ उंखरछांनाहहंरुद्रवाहा॥ व
 ऊनअधिष्ठानयाय॥ उंरुंखंमंलमयनीवकीरुववऊवध्वं॥ धनऊऊजा
 हारुनवलदह्रुविहाया॥ धनधुनलवाय॥ युवाकछलवाय॥ गुनसधु
 जयाय॥ ध्यानं॥ ल्वंदवीधुखिरुगासि॥ सर्ववजानागायिनावर्यानयवि
 रूधषधुमियाजमिगासुमिगासुव॥ यथामालवलैरुगर्नीधुसिंहनका
 यिना॥ नथामालवनकिंत्वासर्वसत्त्वार्थकानधुन॥ नरुसमूर्पीधुनंवलैसंका
 नकीवाधुनिऊलपृथीवीसुभजधुसुयविहं॥ कानऊनउधुसमरुवऊ
 मयिधुमिवऊपाकानवऊपंऊलवीगानोविहाया॥ विश्ववऊवदिकायाऊ

ऊवक्रयनिधममद्यताजिबुवनीविहाव्य॥ ॐ ॥ आ-पा-निजाऊन॥ ऊर्य
याय॥ यं-ला-घं-सु॥ बलिद्विय॥ थनथ॥ हाहायाडाद॥ क्रियाविधिध्वं
निष्ठायाय॥ थनदवनाऊनिविय॥ थनैजिविदिगवल्लिविय॥ आऊनि॥
नगाऊलाग्निमखनकैकात्रशऊवरुलयमानै॥ ॐ क्ववडीविहाव्य॥ ॐ
एनथ॥ घन॥ ॐ अयुनिहनुवजाय॥ ॐ ॥ ॐ वजायूष॥ सनु॥ ॐ वधि
टुजाय॥ वजगम॥ ॐ सर्वपापदहनवजायसर्वपापदह॥ लायहाड
ॐ वजयूष॥ अऊन॥ ॐ वजवगमय॥ मऊ॥ ॐ वजविजाय॥ स्वा
नउम॥ ॐ वजजाजाय॥ काय॥ ॐ सर्वसंयद॥ कालस॥ ॐ अमृगप्रि
यनम॥ ॐ येशमृग॥ अऊनइइसनुधनैश्वसथहाडाऊलाऊनि

विय ॥ थनं निमहावलिविय ॥ थिहाज ॥ यं दग्निवलि स्थानकन प्रथ
याय ॥ श्रीखस इद्रगयाडा सर्वधुवर्धनसं ॥ कमायन ॥ मधुन विसर्जित
गुननः गुग्गुलु कक्षा पूजा कक्षा हिथ क आसिर्वादि ॥ मधाद्रुति ॥ कक्षा न
मधुलया गो सिधिमरु श्रीलक्ष्मीय कक्षीय कक्ष वक्राय ॥ वक्र कक्ष हि
मिसर्ग कुल कक्ष लक्ष्मीय सचय कक्षाय ॥ नाग चदिसर्ग ॥ थनं नि ॥ क
नाजिय पूजा ॥ समयाय कक्ष ॥ कुलदानय कक्ष ॥ हंस कुनय नाग च मय
शसदा पूजय निरु वा निधाय दव कक्ष यव आदो गवम निद्रया
क्षीर मिता स्य प्रजाय च विरु गावया सर्वममदरु कुल स गीया शिय
पजला कक्ष पावनस्य नय कर्म प्राप्ति ॥ पदानन नि विरु वरु सात्य

१ नशनागसाधन ॥

॥ मस्युप ॥



॥ पूर्व ॥

॥

॥ उपलामथावन ॥



॥ उपलामथावन ॥



ॐ नमो वक्ष्यामि ॥ नमो नागरावता ॥ ॥ ॐ नमो र्यं हलहासुननमधवायूम
हलधन्वा रापटाकि नमो नमो र्यं वनधं मुक्कयटा कपे निममुली नमो र्यं
दलयमि नमो नमो र्यं वनधनागनाऊसफरुध विरुवि नमो नमो र्यं
दकिधं मुऊनरवधधनं ॥ वाममुऊन नागयागधनं सर्वाली कालरु
धिनं ॥ कलायनिवऊ यर्यं कसुनस्कि नमो र्यं याग ॥ धूपं ग्रीखमु ॥ व
र्यं कुरुवनामहा नागमसमप्रीत्या रागावनाह यावर्षधना प्रमशरु ॥
॥ ॥ धनगुनममुलसमाधिं कृत्यामानसा विविधं दवयजा ॥ धूलि
नागपूजा ॥ वनधं कालसखानरुखोलनस्य रावता ॥ मटिगिमुन्यना
नकनं कं वक्रनिष्यन्नं लावता समधिनी वेलावनयनिधामनवऊव

नृधर्मसर्वोऽसिमीमानव्यास्यं सकुरुधा हृषिकीदिशुऊवामकननागयाध
विजिज्जिगवऊवत्तलसमायनंभीपीजंसर्ववनधर्जदन्दीननाहधनसर्पा
कालीसमयसत्वीविहाय॥ नलिस्वद्वीऊचस्मिसमानंज्ञानसत्वीअघादि
दानयूनसर्ज॥ ॥थनधयशीखलुमर्घयाय॥ नलेहजगस्यवनधका
जसदुनहायक॥भीखपूजावनूधकासपमाथ्वीपूजा॥ ॥उं वऊसमय
सत्वंक॥ ॥००॥ मूस्काप्रवधधालियिच॥ पूजा॥ ॥उं आ॥ वनूधायकंस्वाहा॥ पू
जामनु॥ नाऊनयायसात्रिकसाइइरुनछाहायूहास्रकस्तिसाखशुनूवा
कस्तिऊजसनाडामनस्यजायधान १०८ मनु॥ ॥उं वऊवनूधमहानागभधिय
न॥ ॥००॥ हस्वदीयवर्षाययश्नंनकंस्वाहा॥ ॥पंलायंमुबलिविय

दूक काय ॥ शुगुमिविय ॥ धन चां किदाजसकय ॥ सकविय अइउमनय
धम्मिमुनि ॥ १ ॥ कथनियुजा ॥ पूर्व अननकनकमय कमलीकल
मूर्धन हिन्नाजनय रुसफरुक्षमकमूर्ध्वदिशुर्ककनाकुलिर्न
नारुजवकुजगकाजउयजिमनयमूर्ध्वसमयसत्वगतसमीक्षा
नसत्वी ॥ धूप शुगुलि अर्घ्यागनी लयाजिमानध्वपूजा ॥ ३ ॥ अनना
यकूखाहा ॥ पूजामक्त ॥ गोरुनयाया ॥ ३ ॥ अनननागधियमय ॥ ३ ॥
उम्वदीपववायय २ ॥ नकूखाहा ॥ ४ ॥ पंलाक्त ॥ वालिवियशुगु
नि ॥ कलिकय ॥ मुनि ॥ २ ॥ खानकस्यरावना ॥ दक्षिणयमनागमदिम
यंगीवसना ॥ अनभीषसफरुक्षकन्दमृक्षानन्निर्दिशुर्ककमूर्ध्वकना

[illegible]

कुमुदिसाखन ॥ ४ ॥ शिवना ॥ उरुजवासरुकिर्न सफरुक्षीनकुमर्यद्विभूज
 किमभिवहजिगारीदि कुडैकमख्वरुगा अलिनीना रुजधसर्षाकारनउय
 निमनूष्यसंमयसंत्वीनसमंरुनसत्वी ॥ धूपकपूज अर्घ्यमंलपूजाप्र
 नथ्य ॥ उं आ ४ वासरुकीय रुं स्वाहा ॥ पूजामनु ॥ गाउन ॥ उं आ ४ वासरुकि
 मरुनागा मधियन ६ रुजचुद्वीपवर्षायय रुं न रुं स्वा ॥ ॥ यंला द्यं रु ॥ वलि
 वियं कुमुदिसा इ ॥ ३ ॥ अमयर्षयपालसिसकमयस्वसिर्ककभंर्ष
 सफरुक्षीपीगदि कुडैकमख्वरुगा अलिनीना रुजधपन्नगमकारनउयजि
 मनुष्यनूष्यसंमयसंत्वीनसमंरुनसत्वी ॥ धूपवाज अर्घ्यजाडा न पूजाप्र
 मानथ्य ॥ उं आ ४ र्षयपालाय रुं स्वाहा ॥ पूजामनु ॥ गाउन ॥ उं र्षयपाल

महानागमधियम ॐ हज्जम्बुधियवर्षायय ॐ नैर्हं स्वाहा ॥ १ ॥ यं स्ना धीम्
वलिविय उगुनिकु लेर्क कम ॥ ३ ॥ रावना ॥ नैमन्धिक कौटक काशमय
सफर ॥ ॐ इनीलाहैरवमन राधिक या कशिव विरुज कमूर्खी कगा
अलितनाहैरव उजगम कानै उपानिमनूष्य न समय सत्वं न समं ह
न सत्वी ॥ ध्यय न कशान अर्घ्य पुन जा मङ्गी नथ ॥ ३ ॥ आ १ क कौटक टायन
स्वाहा ॥ पञ्जामन्त्र ॥ गाठन ॥ ३ ॥ क कौटक महानागमधियम ॐ हज्जम्बु
धीपवर्षायय ॐ नैर्हं स्वाहा ॥ १ ॥ यं स्ना धीम् ॥ वलिविय उ
गुनिकु हास ॥ १ ॥ रावना ॥ वायु धी कलिकलाहमय सफ
॥ यी न न क न वि यव ॐ ॐ नू क नाना क्रि न क ध वि रुज क

मखेह्मगा अलिनीनाहजधपन्नगीउयजिमननर्थसमयसत्वीगतसमझानस
त्वी॥धयकनुनि अर्थककगत॥उंआःकुलिकायस्वा॥पूजासक्त॥न
उना॥उंकुलिकमहानागधियन॥हजम्वदीपवर्षीयय॥रुनैक
स्वाहा॥॥यंलाघीम्॥वलिवियकुमुनिपूवादि॥८॥रावना॥॥
त्यामहापन्नय्यमयनीलायनाकिनशिर्नसकरुशकनकवहूदि
कुजकमखेह्मगा अलिनीनाहजधपन्नगीउयजिमननर्थसमयसत्वीगतसमझानस
समयसत्वीगतसमझानसत्वी॥धयपन्नकशुअर्थमूटि॥पय्याया॥उं
आःसयआयस्वाहा॥पूजासक्त॥नाउना॥उंआमहायन्ननागधियन
हजम्वदीपवर्षीयय॥रुनैकस्वाहा॥यंलाघीम्॥वलिवियकुउ

निःप्रियं गु २ ॥ अर्थयायक ॥ वामकज रुधा का न द द द द द व
 न दा हि न य प्र सार्य ॥ थ थ न र्म स्याय ॥ ॥ अनक वा स कि न क क
 क क्को ट क य न म हा य न र्ध र्वा ल क लिक व न र्ध या न द व नि म हा य
 व नि सा म सि वि द धु ध न म हा द धु ध न र्ध या न ल क ल २ स न द्या प न च
 सा ग न म हा सा ग न अन वा क फ धी का नि म हा का नि स न य ल द्रा हि क म हा
 द न भि नि म हा भि नि आ ग रु द ग रु नाना ना धिय न या रु रु व ४ रु रु द
 स्वा हा ॥ ॥ म धु ल थिल कः स्वान न न रु नि ॥ ॥ न मा रु न आ सि वी द
 वि म रु न ॥ ॥ ॥ रु नि ना ग य ऊ वि धि स ना य ॥ ॥ अन रु रु न सा य
 सि म चू य क व न को न रु का हि नि स ग य क रु या ॥ ॥ वालि म न्नु ॥ ॥

दम्बलि ॐ हज्जम्बुदीयवर्षाय यः सर्वं रुद्रं वः स्वाहा ॥ ॐ कृष्णं कृष्णं लः
अनन्तनागदीनां ॐ दीप्यं धूपं दीप्यं गर्भं नैवशादिवालिकप्रचण्डां
ॐ देसत्वायकारार्थं वर्षधामनामस्तु ॥ ॐ नैवशादिवालिकप्रचण्डां ॥ ॐ किम्बा
स्कोनाशोनिजवाधिकानागधिया नियुक्ता ॥ यरथाकी ॥ इवैवूयापि
वृगकश्चनर्क ॥ द्वालयथासुकिनागनाजा ॥ वृक्षालयपृथ्वीन
वागनन्दउयनन्दोऽल्लनाजिकासु ॥ ॐ गजकश्चनर्क ॥ इवैवूयापि
टकसालदीर्घसु ॥ नदीयत्वासुप्रथमं नामनामनामस्किन् नककड्य
उद्यानपृथ्वासिवृजस्यहा ॥ ॐ लनाद्रुदवकुलिकादिनाजापमहिना
जायजकोननादी ॥ ॐ यामहायमसनाजखर्षु कृपादयानकुलिका

[illegible]

2617
P. 1234. 116

2.617
RILEY HALL

दिङ्गदाययम् ॥ ॥ यस्यामलाधनारुं फलिसमाधि वनवक्रवानदध
 नैयध्यायाधये अंधनृनिर्गनकुज उर्ध्वपि रज्ज्वकधलभीनाचायना
 अरुनयगासिनसि न्यसुमालीठयाद ॥ वज्रालानलार्क किनगुधन
 सिर्नरुवायदवकु ॥ ॥

१७ यकापका ॥
 १७ यकाचिककमि ॥
 १७ काडकनडास्या ॥
 १७ धरुगुडिका ॥
 १७ पनस्यांठरानस्यां ॥
 १७ धानसिजनेव ॥
 १७ यकायनका ॥
 १७ रुद्रुव ॥

गुगुमिसिचय ॥



हिः श्री खलु सम इह न स पापा उरु स्वाः स्वा कृत विष्नुनि हाः
 कुडि कि नरु न थ सि कृ निया खा वा सि ला ये सम हा ग ता हि या ॥
 लं ख वू डा भ स थ न वा ग म पु गु नि का ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

१ व प्र म प न स्वाः ॥	१ व क श्री खलु ॥	१ ना रा या वी य न स इ थ ने ॥	१ सि क ल प म स न य कृ ज साः ॥
१ को य सु स्वा नः ॥	१ व क ह वा य हा ॥	१ पा धा ज कृ ग हा ॥	१ ना ग वृ स न य कृ ज साः ॥
१ को य मा ल मि स्वा ॥	१ न क व न्दः ॥	१ नृ प क म प्रिये गु ॥	१ न र थ ह ज ल १
१ क र्ध वी ज स्वा नः ॥	१ डी सि ग ॥	१ न वा ज्रा कृ न प न क म ॥	१ प र्व स नी ले ल २
१ आ ह ज मि स्वा ॥	१ ना य व क ॥	१ थ मि स के लि नी थ ने ॥	१ द कि ग म ल लि डि ३
१ व न मालि स्वी ॥	१ म नो सि ल ॥	१ ऊ ल ऊ कृ ॥	१ प श्वि म प म ना ग सि कृ ४
१ ड ल स्वा ॥	१ क सि हा ॥	१ का प ज ॥	१ उ रु ज स प न क य ली ५
१ नृ प क म स्वा नः ॥	१ ग थ डी ने ॥	१ व्या रु ना ग ॥	१ अ र्णे पू ष्य ना ग म ल ६
१ क ल स्वा नः ॥	१ ध प श्री खलु ॥		१ नी म न्म मू ट की स ७
१ स्वा न डी ॥	१ पू गु नः ॥	१ हा ग व ॥	

१ स्वान उमः

पुनः ॥

१५-अव॥

समस्तभूतकल्याण

१. क्री. मास ॥ १. न. कि. सि. ला. स. ॥ १. हि. कि. म. ड. ल. ॥
 १. म्या. ग. हा. म्. ॥ १. क. प. य. न. क. ग. ज. ॥ १. क. लि. प्या. ॥
 १. क. क्री. का. ज. म. ॥ १. वा. न. ज. य. क. ग. ज. ॥ १. ली. य. स. न. य. ॥
 १. क. य. गु. म. ग. ॥ १. क. म्. जु. नि. ध. न. धू. प. ॥

॥ १ वायुव्य. ग्राहीक. न ट ॥
॥ १ वृद्धोने. मक्षिक. डाहा ॥
॥ १ पक्षिमृक. पक्षगन्ध. पक्षर
॥ १ गव्यसाइर. धनइनेथनइना ॥

रसमनाम्नूले

१॥ जिन स्वां. हो. अग्नि सिरवा ॥ १॥ नाग आवाहन ॥

॥ १५५ ॥ धानि धन ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१ नैसाक. लि. लाय ॥ १ हायूहामल ॥

१ कृष्ण न किं ज्ञेयं स्यात् ॥ १ स्यात् न किं स्थितिः नाड्यन ॥

१५५५. साखवज

एवमुक्त्वा पथन ॥

यानरुमा ॥

येकाजमवायूमल्लं धनधरनीलझाऊकनं नड्यनिलैकाजशं जकुरु
नकुरु नड्यनिलैकाजपृथिवीमल्लं यरुजमं यटकुरु नड्यनिलैकाज पृथि
वीमल्लं यरुजसपीककानेयू निसस्वजाककुरु नड्यनिलैकाजशं समनूमल्लं
कुकाजमं कुरु झाने यरुजस यरुजो जयरुजी न हानार्धहो जवकुरी कवसिपननी

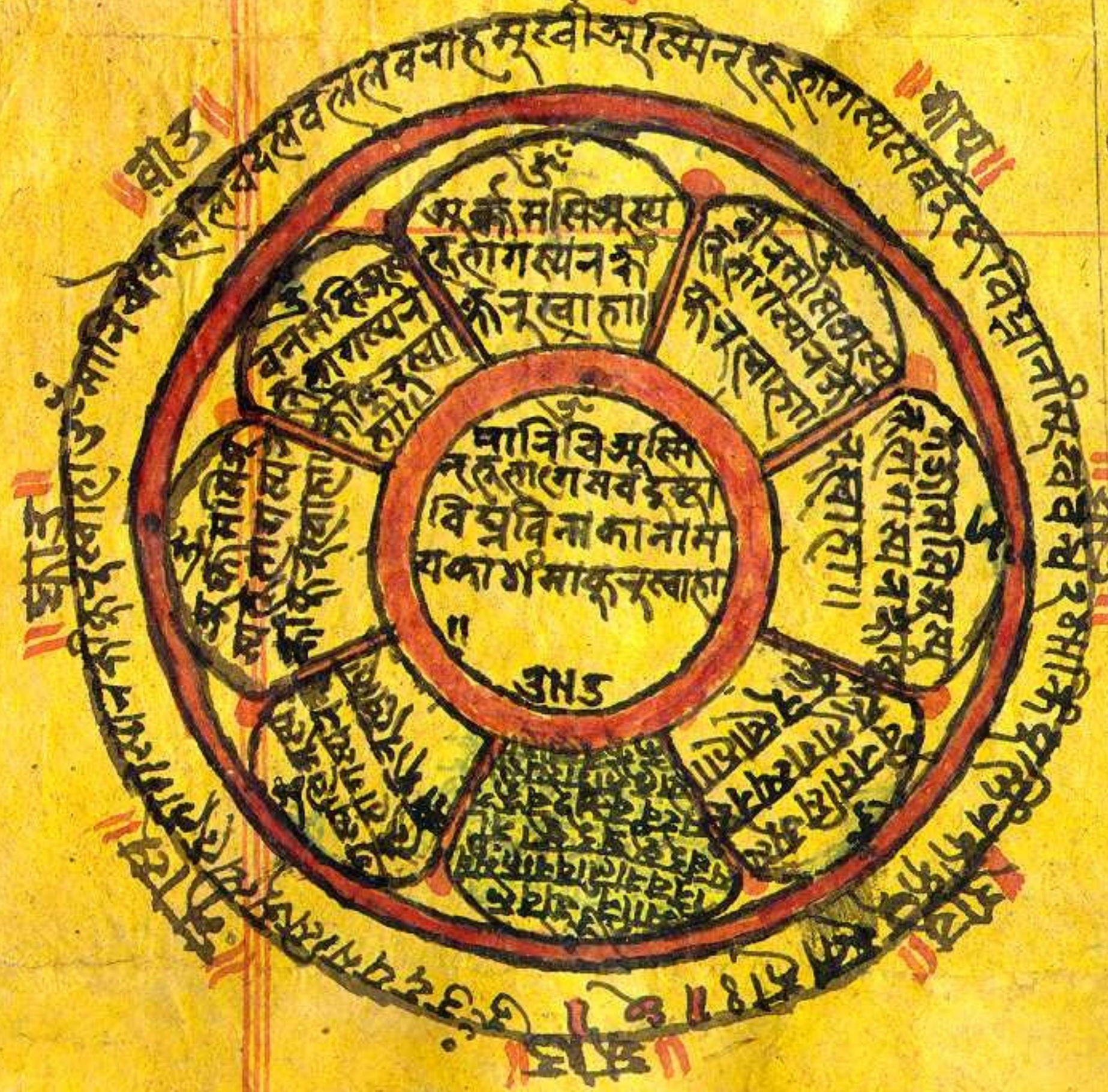
एकलथायनयायक ॥ झापीमिथियाहिलाय अयाद डानलूपलडाहपल लवकि
डाहवकिमाय थागासनअसुदलयदमथायाडा अयाद डानसिऊयाकीलाकयाडा
अयाद डानकीर्थलं ययययलव यकडायमि यकमृकः यकविहिकयः अयापिनय
वसडकाः कुरुनिसस्रकानः हारुहिन ॥ कलशः मरु नागयः सयः पाऊ ययग
हः वरुकाथु मिसकायनायाय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

९ नागमडुन ॥

॥ झाउ ॥

कललवनाहमुखीअस्मिन्तलगा

॥ अ३ ॥



एव वक्रायनी ॥ पीरुवर्धु ॥ हंसवाही श्रीषः सिमा ॥ मगः वृत्ता ॥ ककपिनदि
अनननाग ॥ वन्द्यागमूसा ॥ असिमा अरुनडा ॥ हरुमसखा ॥ वृन्दना
जा ॥ सानिनि ॥ वेद्यः सिद्धा मयजीया ॥ वृन्दियिथा कथा ॥ ६ ॥ उरु
न ॥ माह ववनी ॥ ववकवर्धु ॥ विष्टनः खदा अः वववाही ॥ विष्टलसिमा ॥
मगनः कष ॥ वेनावमिनदि ॥ वासकिनाग ॥ गहानमसा ॥ पत्रवर्धनडा ॥
रुमरुमिरवान ॥ कवननाजा ॥ रवकर्धु ॥ वेद्यः सिद्धा सडा जिया ॥ उमडा
ल्या कथा ॥ ७ ॥ योश्चिम ॥ वृन्दायनी ॥ कृकमवर्धु ॥ गङ्गवाही ॥ असा
कसिमा ॥ मगनः गृध ॥ पवीस्तिनदि ॥ ककनाग ॥ कालकिलममान ॥
यानववर्धनडा ॥ सारवानरु ॥ वनूधनाजा ॥ चानूगिपि ॥ वेद्यः सिद्धा

नागभङ्गीया॥ वनूधरुद्र॥ ॥ दक्षिण-वाजाहि॥ श्री कृष्ण-महिषवाही॥ च
कसिसो॥ मगज-वध॥ ग्रामयनिनदि॥ कर्कटकनाग॥ कर्जकरुजवध॥
भानविजवन्दुर्जडा॥ हर-धरबाज॥ उर्मिनाजा॥ कर्महीर्थ॥ वेद्यसिद्धा॥
घरुजिया॥ काजागिद्वय॥ ॥ अग्नि-कुमानि॥ नकुवर्धः कर्हि॥ नय
खावाही॥ कर्ज-कुसिमा॥ मगज-सर्गा॥ मधुसामिनदि॥ यमनाग॥ अरुण-हाः
सम्भान॥ जलवन्दुर्जडा॥ हर-धरबाज॥ अग्निद्वयनाजा॥ वेद्यसि
द्धादिवाक्या॥ असुहासकृत्॥ ॥ नैमर्याविष्णुवि॥ ॥ सवर्धु॥ यक
गन्तुवाही॥ यकमिसिमा॥ मगज-वास॥ उरु-कुसामिनदि॥ महायमनाग
जशिवनरुगासन॥ ॥ भान॥ विजवन्दुर्जडा॥ हर-धरबाज॥ उरु-ना

जा॥ गन्धर्वमि॥ येन्यसिद्धा॥ ककुलिया॥ ऊर्यसाकृष्ट॥ ६॥ वायव्य-वासु
द्रा॥ नकवर्धकपात्र॥ प्रकवाही॥ अरुनसिमा॥ मग-रुज्जुखाखा॥ ग्वममि
नदि॥ सखयालेनागा॥ धात्रीधकभभन॥ कालवदरुजडा॥ रुनसजट
रवाज॥ वायुडात्राजा॥ दडातिथी॥ येन्य-सिद्धा-घृष्टानिया॥ कटिद्रुष्ट॥ ७॥
रुष्टभन॥ महालक्ष्मी॥ ग्वनवर्धु॥ खडाकुसिंहवाही॥ एकटीसिमा॥ म
गज-मसागराज॥ नमदानदि॥ कलिक-नाग॥ किलिकिलातभभन॥ प
मवदरुजडा॥ रुनविमिरवात्र॥ महादडात्राजा॥ रुजडात्र॥ येन्य-सिद्धा
विजुपाक॥ रुष्टभनवजिद्रुष्ट॥ ८॥ धनीजिज्ञालावजि-वजावजि-प
मावजि॥ धनीजि-पूर्व-काकाभभरुष्टा॥ उरुज॥ उरुकाभभमा॥ य

श्विमस ॥ स्वाना स्याजका ॥ दक्षिणस ॥ शुक्रास्थावीना ॥ मरुतयमजकिरु
पीना ॥ नमस्ययमइरीयीनजका ॥ वायुव्य ॥ मडदिनके ॥ धामा ॥ ॐ ॥
नऊमसथनीस्यामकृष्ण ॥ जनायागिन्या ॥ एकवक्ता ॥ वरुर्गुडा वामके
यान ॥ स्वर्धाग ॥ दक्षिण ॥ मजकहिंका ॥ प्रयालीट सवासना ॥ निर्वसना
यश्चमडामुडिना ॥ विनशामके ॥ कथनोदयपि ॥ ॥ ॥ नृनियकाय
वक्ता ॥ मरुतय ॥ शुक्र ॥ थनीलिकायकसव्याम्नदडा ॥ याम्नादवीनाय
वर्ग ॥ पूर्वस ॥ जलकासम्बज ॥ वक्तावगमदवी ॥ उरुज ॥ हयग्रीवस
म्बज ॥ स्वर्धागहिंकादवी ॥ पश्चिमस ॥ मरुकाशगर्गधायाम्नास
म्बज ॥ शुक्रनीदवी ॥ दक्षिणस ॥ हजकधायाम्नासम्बज ॥ वक्ताव

हिनीदवी॥ अरुणस. प. अनुराग. न. धाया. म. सम्वज. स. वीनादवी
॥ न. सम्व. न. वीना. धाया. म. सम्वज. महावजादवी॥ वायुव्यवज. स.
त्वधाया. म. सम्वज. य. क. व. हिनीदवी॥ रु. न. महावजा. धाया. म. सम्वल.
महादवी॥ ॥ द्वि. रिय. वा. क. य. क. अ. स. न. क. न. क. य. भां॥ थ. नी. लि. वा. क.
य. क. स. या. म. सम्वज. या. म. दवी॥ श्री. ॥ पूर्व. स. क. ति. न. का. धा. म. यो. स.
म्वज. न. व. नि. दवी॥ उ. रु. न. महावी. ना. धा. या. म. सम्वज. महा. रु. न. वी. द.
वी॥ प. श्वि. म. स. रु. का. ना. धा. या. म. सम्वज. वायु. व. ग. म. दवी॥ द. की. ध. म. स.
रु. डा. धा. या. म. सम्वल. महा. रु. की. दवी॥ अ. र. ग. रु. डा. धा. या. म. सम्वज.
स्यामादवी॥ न. सम्व. महा. रु. न. व. धा. या. म. सम्वल. स. रु. ड. का. दवी॥ वा.

श्रुत्या॥ विष्णुयाक्षायास्तसम्बल॥ हयकश्रुदवी॥ ॐ नमो महावगा
क्षायास्तसम्बल॥ स्वर्गभननादवी॥ ॐ ॥ पथसायिरुचकीअष्टजनीः
लं॥ धर्नलि विरुचकस॥ व्यास्तदती॥ व्यास्तदवी॥ हाकवर्ग॥ पूर्व
स॥ खलुकायाजिनीक्षायास्तसम्बल॥ पचलुदवी॥ उरुजस॥ महाक
क्षायास्तसम्बल॥ वलुकिदवी॥ पाशिम॥ कीकाजक्षायास्तसम्बल॥
प्रहामनिदवी॥ दकिधस॥ विकडिष्टिक्षायास्तसम्बल॥ महानासादवी॥
मृग॥ सखीजाक्षायास्तसम्बल॥ वीजमनिदवी॥ नमस्यसा॥ अमृताक्ष
यास्तसम्बल॥ स्वर्गवीदवी॥ वायुथस॥ प्रहाक्षायास्तसम्बल॥ नकि
वीदवी॥ ॐ नमो दहाकनिक्षायास्तसम्बल॥ क्रमछायादवी॥ ॐ

खलुकपालादयावीनाः प्रकवकाश्चवगुरुकुआः शीनेग्राऊदामकूटिनी
मालिङ्गनकुऊद्यथनवऊरुयष्टाः वामगुरुऊद्यथनः कपालखद्योऊद
किरुतमनर्कः पेशमडादिगमवाआटासनखिगाः ॥ पूर्वददयाः
प्रकवकादिगुरुआलिङ्गशः कपालहस्तादकिरुतमनर्ककिरुकाः
विनयाजादप्रपिन्यमककः ॥ अद्ययजागसमायन्नादिमस्यना
यश्चमडाविरुविना ॥ ॥ थनीलिङ्गनः ॥ पूर्वसः ॥ जाकिनीदवीः
रुवर्हः ॥ उरुजसः ॥ जामादवीः ॥ मेवर्हः ॥ यश्चिमसः ॥ परकुला
हादवीः प्रकवर्हः ॥ दकिधसः ॥ नृपिनीदवीः यीनवर्हः ॥ प्रनायोगि
न्याः प्रकवकाश्चवगुरुकुआः वामखद्योऊदकिरुतमनर्ककिरुकाः दंश

कपालविनशा मरु कक्ष पञ्चमदा विरुषिना आलिठनसीरुमा ॥
पकूनसो ॥ पाशुदकास्यनया भूमिकलाशुग्वध ॥ ४ ॥ ॥ धइनधीः
हृत्पुण्यां कान्तसमनया हा पाताजस पगुर्गुगस पगुदिपा यगुः
दिगस ॥ पूर्वस ॥ पूर्वविदह ॥ उरुनस ॥ उम्बद्विप ॥ पाश्चिमस ॥ अप
नरामदावनि ॥ दक्षिणस ॥ उरुनकूनरुवन ॥ धेया वास यथादस रु
वी ॥ यमा भूकपा सदसना निर्माननकि वसवकि रुषिना अकनि
स्था सख्यावकि नैवसीहा नामसीहा ॥ थकिरुवन ॥ अकनिस्था रु
वनस ॥ लंकानेश अतिमकुली कंकानेश वन्दमकुली ॥ रुगवर्क
रुहवर्क वरुमुख मूखमुख कृष्णवाम ॥ म पाश्चिमजक द

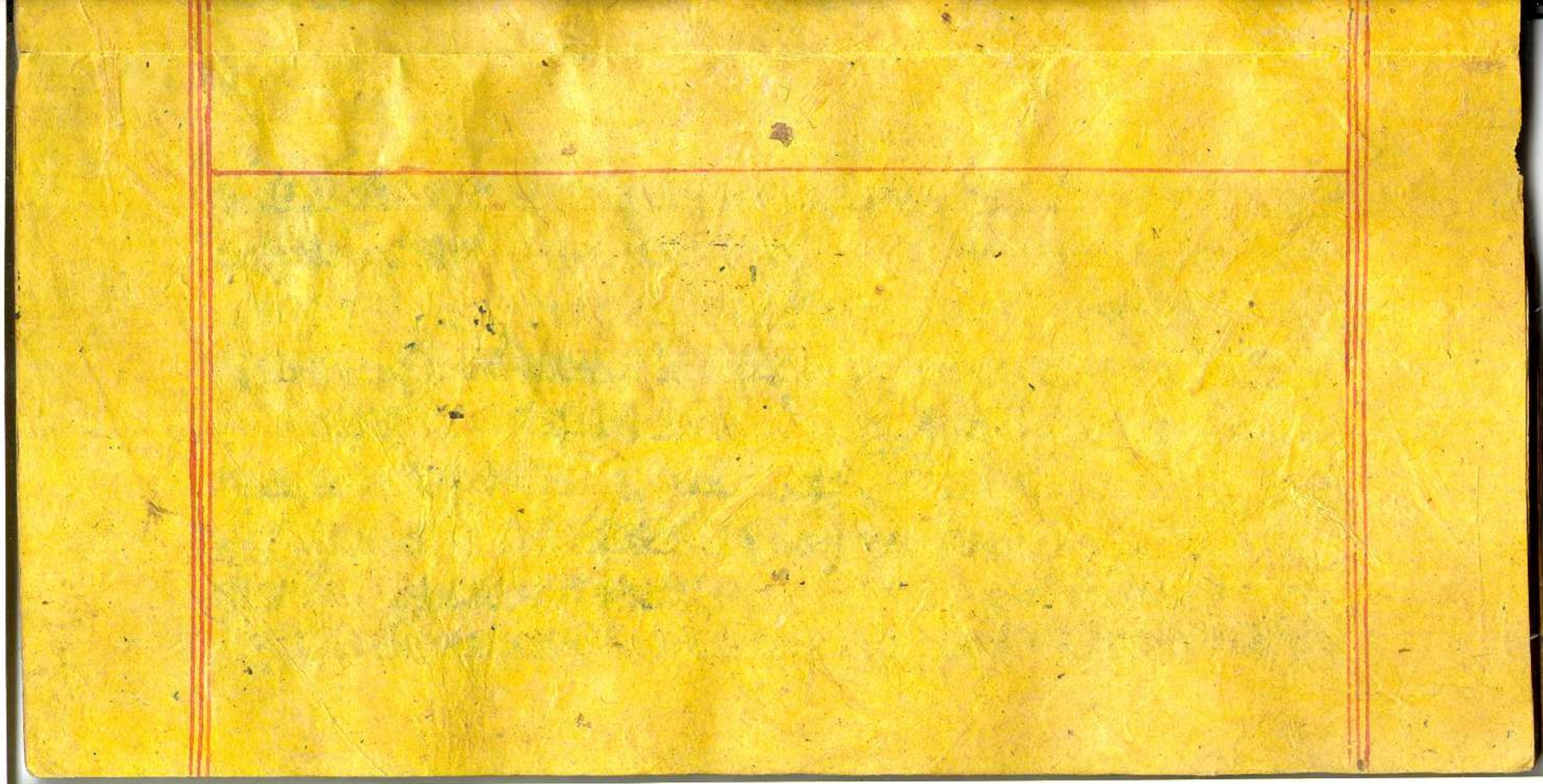
किं शयीर्ग प्रमिसूखं नक वकुल दिनद्वि विष्णुमाननं ईशाद्वटलिषनं
विश्ववर्जं कुरुमालिन ऊगामकूटिन ऊगामकूटिन वामवनिगार्धः
वन्द्यधामिनी दक्षिणं कुरुमूलं वज्रमालायाकिर्ग पञ्चकपालधामिनी
द्वादशकुञ्जं पथमकुञ्जद्वयन वज्रवावाहि शालिङ्गन सेवकवज्रयध
धर्जं द्वि कियकुञ्जद्वयन गजवर्मधर्जं रुद्रियकुञ्जद्वयन उमज्ज्व
द्वादशधर्जं वरुथकुञ्जद्वयन कर्हिकाजकूपर्ह कपालधर्जं पञ्चमेतु
ऊद्वयन यजुष्याधधर्जं वरुमकुञ्जद्वयन विष्णुवर्मधर्जं सश
पञ्चसुननसिनमालाधामिनी व्याघ्रवर्मनिवासनी ॥ ४८ ॥ गजवीरुस
हास्येनोडक्यानक फेनूशाकुकुनसमकिधुनवनायजसान्विनी ॥ ५० ॥

शिवकृतकयूनशिवामयि यद्वा प्रवीरुहम्भवति ॥ यश्च दाम्पत्य
दीनविमर्शलेवामः दक्षिणरागप्रकिरुः स जवकालिनादि वामकेश्च
गनयूनया जालीठासनरुं रुगवर्कधीवक्रसन्चलमात्मानं रावयन् ॥
॥ श्रीहनुकया सनिद्रसं ॥ वज्रसः शक्तिनी ॥ यश्च सः जामा ॥ गजवर्मा
सः खरश्च जीहो ॥ नयिनि ॥ उमनसः काकास्या ॥ खडाङ्गसः उज्जकास्या
कर्हिसः स्वातास्या ॥ पाङ्गसः सकनास्या ॥ यजससः उमताकि ॥ यागसः उ
मङ्गि ॥ विश्वनसः उमद्रष्टी देवी ॥ वसुसिनेसः उममर्थनी देवी ॥ थ
नः यजसः यजयासः कायवक्र ॥ म्भुसः वाकवक्र ॥ नृगजसा विरु
वक्र ॥ स्यख्वः देवदेवी ॥ थती सनिद्रसगर्भ आनन्दनविष्णोः ॥ श्री

हं नृक वाया मय जम भवन ॥ श्रीवज्रवाजाश्री ॥ दर्शन या य ॥ क्रा
ला वलि डूल वज्र वलि इहा उ न पझा वलि इहा उ न ॥ अष्टभ ॥
न इहा उ न ॥ ॥ थने घट कान ॥ पूर्व ॥ पूर्व वे वज्र वाजाहि ॥ ॐ ॥
न वायूय ॥ हां था या मिनी ॥ वायूय ॥ ने सखा कि माँ हनी ॥ या धिमा ॥ अरु
हु किं से वा निधि ॥ ने सख्य ॥ या धिम रुं रुं से या सिनी ॥ दहि न ॥ ॐ ॥ न
रु रुरु वल्लिका ॥ नक वर्ध नी ल वर्धः श्री ग वर्धः एमे न वर्धः हनि
न वर्धः धे सु वर्धः ॥ प्रगाथा गिन्यात्र कवक्रा चक्रु कुजा वाम कपोला
खडा ऊद दि ॥ हां ठम न कर्लिका इच्छा कना लवदता दिन शासक
क ॥ य श्म म्हा विरुषि नादिगम्बना ॥ ॥ थन वमुदलेपन जा

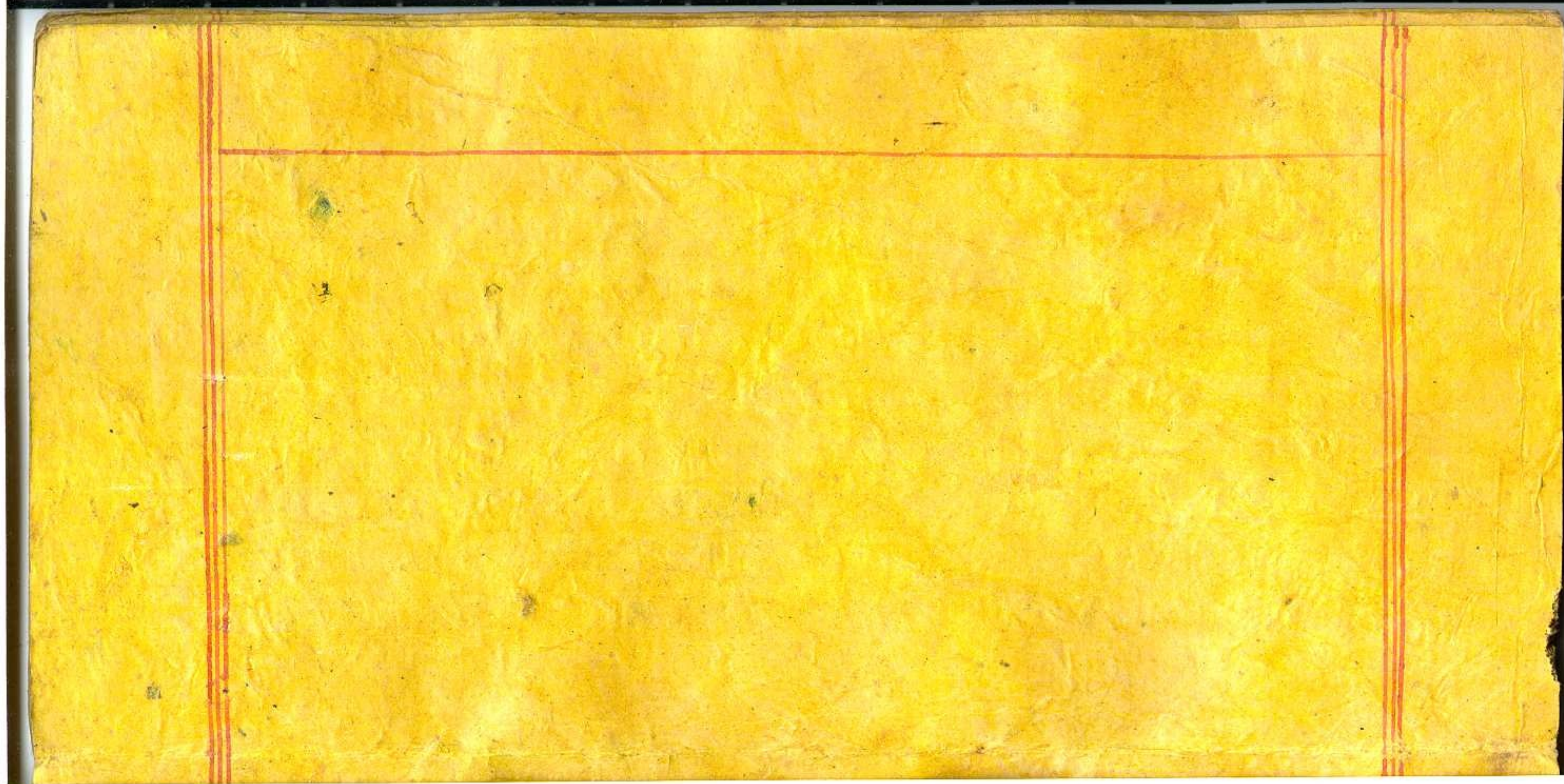
किन्तीनामाखरधुआहाजयिनी॥ ४॥ पञ्चसात्रिविदिगसा॥ ४॥
पञ्चमध्वजियावन्दनारुगवर्किवज्वाजाहिजकवधुमकटकः
ध्वजकवकाशिनर्षादिगम्बजाखरधुमलिमाकारुमखनार्दिभुजा
वामभुजाध्वजकपूरुकायालीधर्वादिशिशुजतःद्वन्द्वनर्जनीवज्वा
करुधर्वापञ्चमडाविषिर्नामवाध्विजाननार्जयाद्वयनतगा
वर्किसमागुष्मात्तजागयन्तिःपूर्वहकारुगवर्किलावयम्॥ ४॥
वैवजधमधुली॥ कञ्जस्मिन्सूर्यमधुनसवेजकवधु॥ त्रकमखवि
नय॥ दहितः कञ्जमुखि॥ गौदवयद॥ मकटकसि॥ दिगम्बजाद्वि
ऊ॥ दहितकरुः वामकपाल॥ खर्वाग॥ पञ्चमडाविभुषिनी॥ म

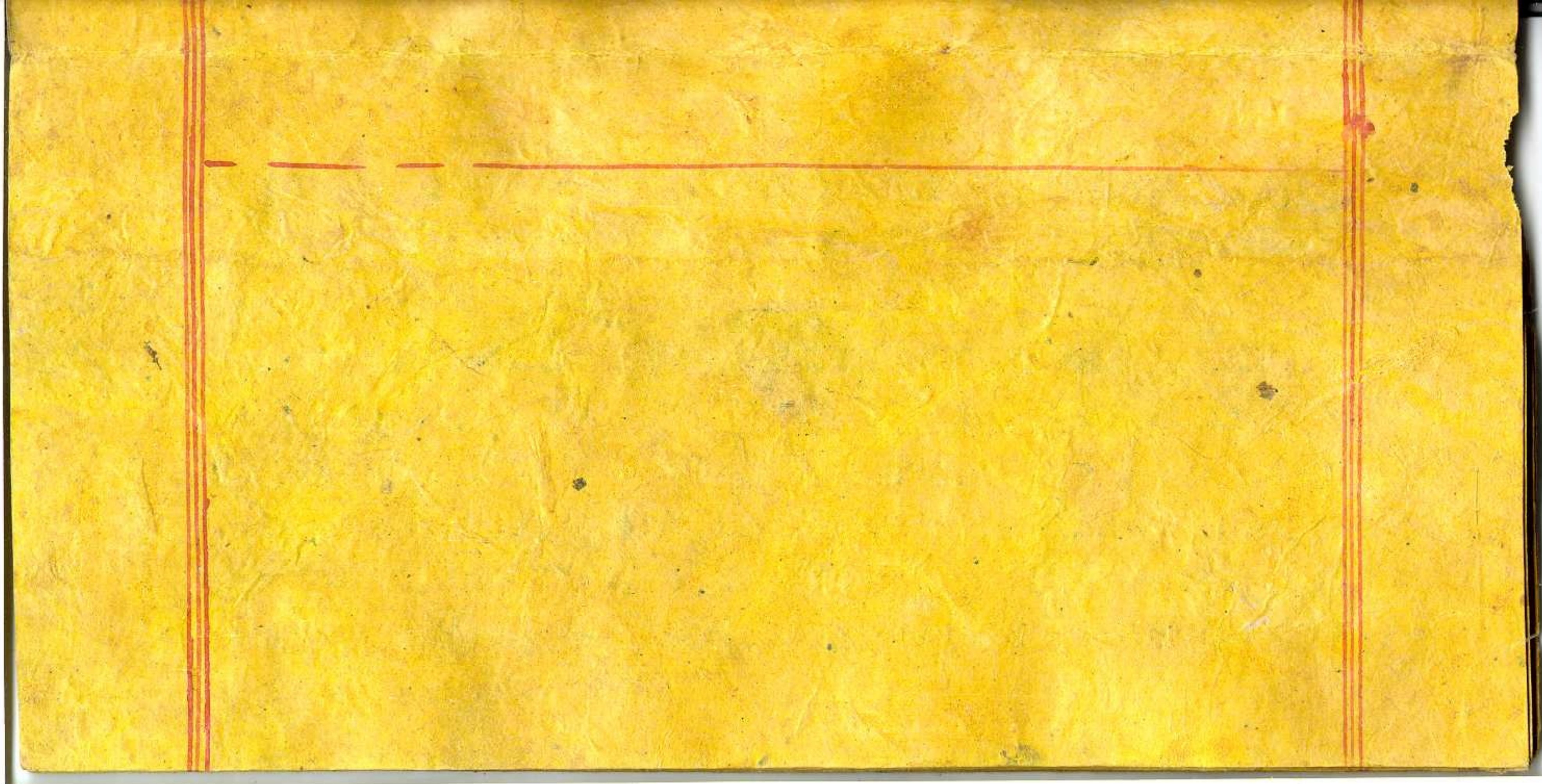
ॐ मालालीकर्ण ॥ नाथरुजधविहृषिर्न ॥ व्याघ्रवर्मकरिहृषिर्न
कयूजवर्मसुधनोपूजसाहिर्न ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥









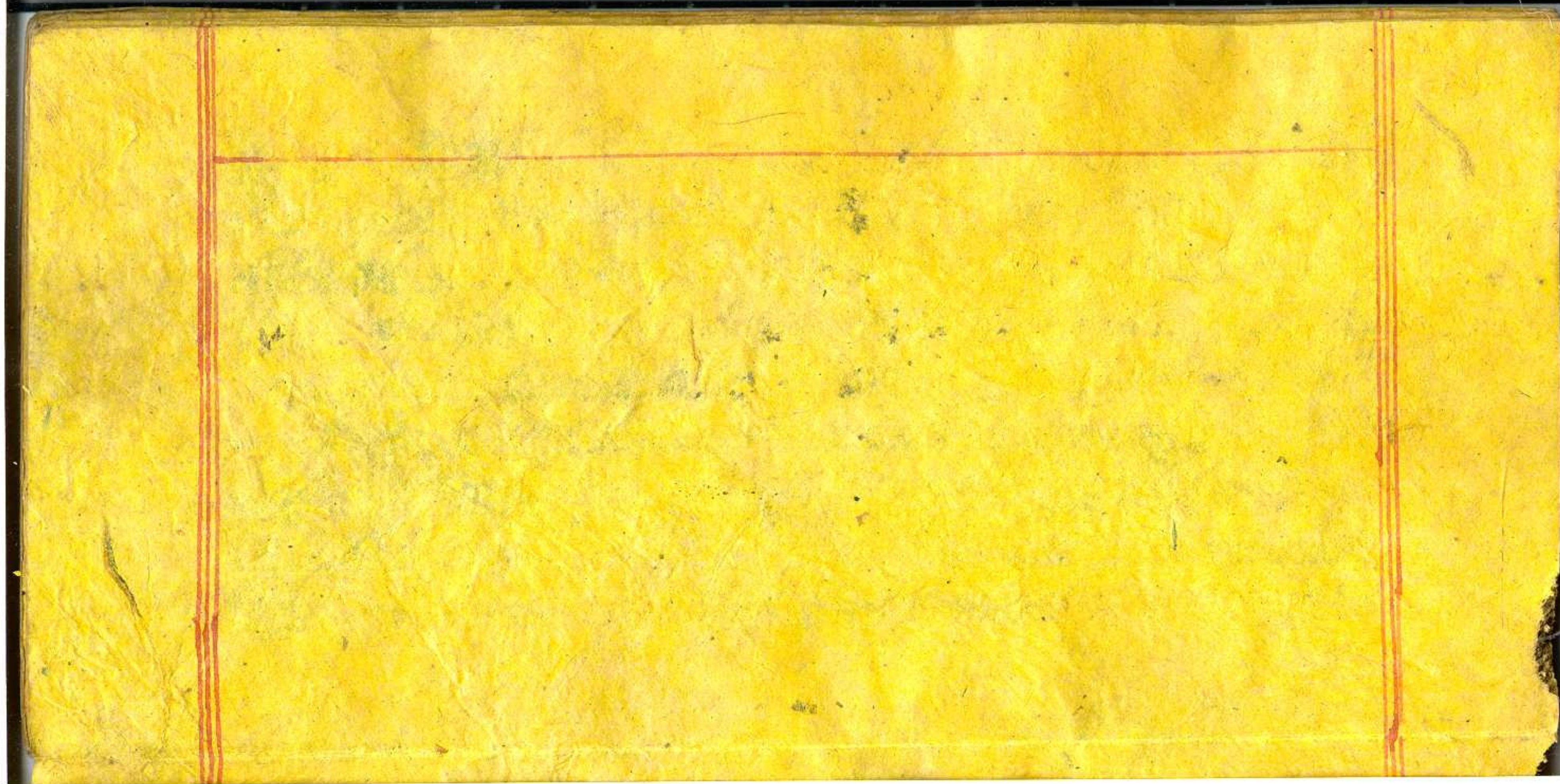


















ॐ माजीवियं हं हं ॥ मूल ॥

ॐ माजीवियं सर्वं हं हं विष्णु विनायकानां हं हं ॥ माला मंत्र ॥

ॐ धनं रक्षा जयं रम्यं रवजुधकं हं हं ॥ व्याघ्र वंश साधन ॥ ५ ॥

१ धं पयासागरुल ॥

श्रीखद्युनाला — ३

कृष्णनाला — ३

कस्तुर — ४

खायकसनाला — ३

मिल — २

याकूगि ^{ध्याग} ह्यायाहा १

अगुज — ३

पालाहा — २

जिह्वा — २

नात्रिस्वी — २

कर्मिहं नविय

रुल ॥ ५ ॥

लला ^{ध्याग}
 या कू गि द्वा या हा १
 क न २
 धु गु ना ला १
 सि ला य १
 य ला १
 स क म ज १
 न य क म त्रि १
 न क व क न १
 क म त्रि १
 न कि ४

शा गी म न य
 इ ल ॥ ५ ॥

